सोचो, बड़ा होकर वाल्टर क्या बनेगा?

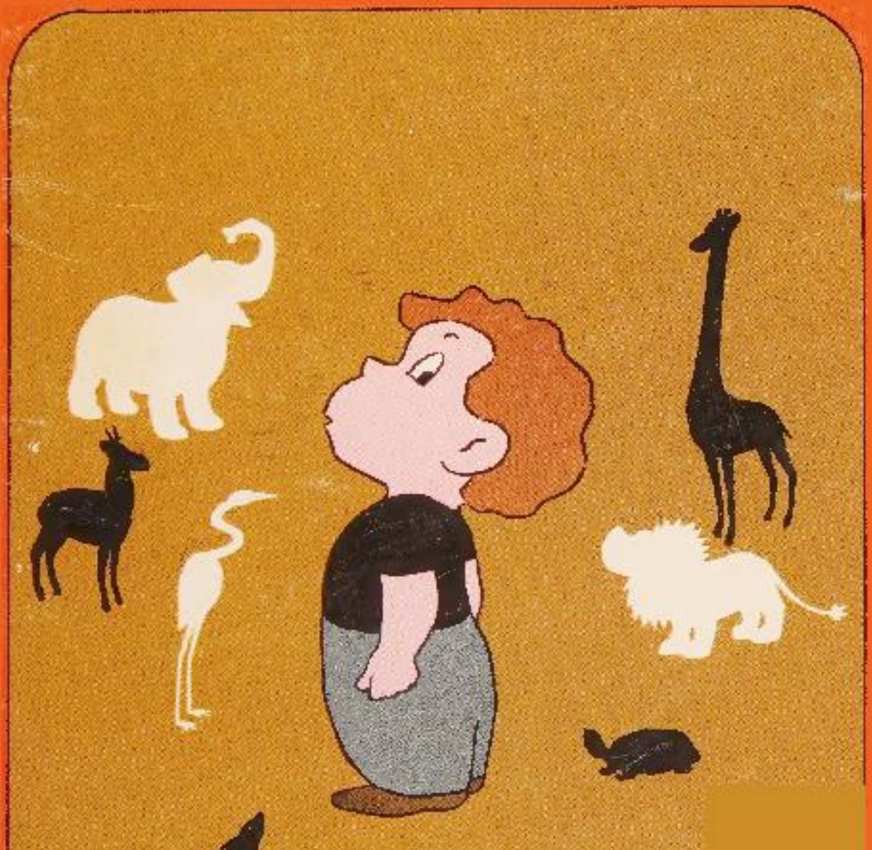

क्रॉकेट जॉनसन

सोचो, बड़ा होकर वाल्टर क्या बनेगा?

क्रॉकेट जॉनसन

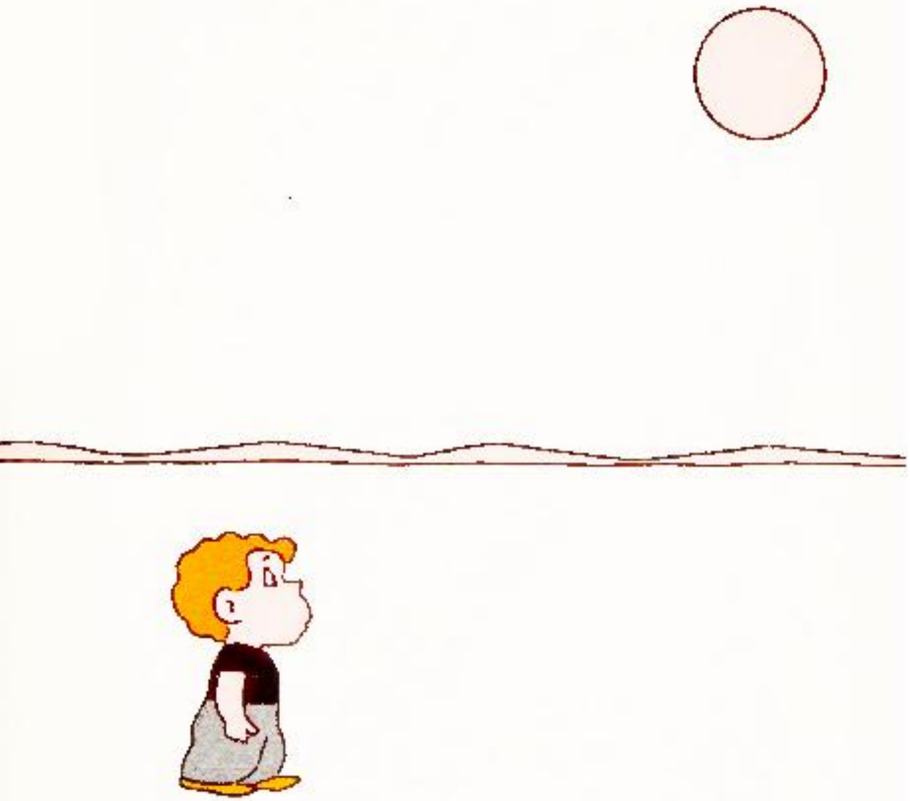

वाल्टर चाहता था कि कोई उसके लिए यह फैसला करे कि वो बड़ा होकर क्या बनेगा.

इसी सोच में डूबा वह सुबह की धूप में इधर-उधर, इधर-उधर टहलता रहा और उसके बाद उसने खुद को एक जंगल में पाया.

वहां उसकी मुलाकात एक शेर से हुई.

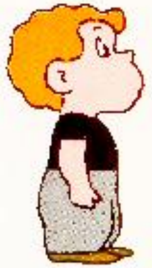

"लगता है तुम कोई समस्या में फंसे हो," शेर ने कहा.

"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि बड़ा होकर क्या बनूँ," वाल्टर ने कहा.

शेर ने उसके सवाल में काफ़ी दिलचस्पी दिखाई.

"क्या तुम्हारे पास कोई विकल्प है?" शेर ने पूछा.

"मेरे पास तब विकल्प होगा," वाल्टर ने कहा, "जब मैं सोच पाऊँगा कि मुझे क्या करना है."

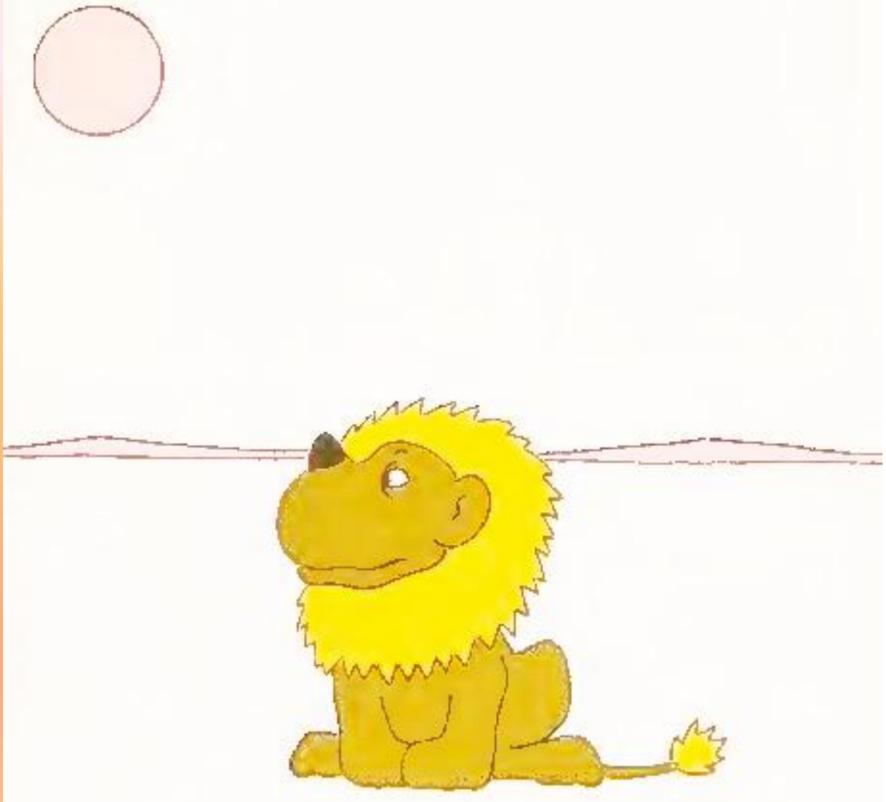

"ऐसे फैसले के लिए निश्चित रूप से बहुत सोच-विचार की ज़रूरत होगी," शेर ने कहा. "उसके लिए मैं अपनी परिषद के सदस्यों को बुलाऊँगा."

"वे कौन हैं?" वाल्टर ने पूछा.

“मैंने इन्हें सबसे प्रतिभाशाली विचारकों, सबसे कठोर विचारकों, सबसे गहन विचारकों, सबसे ऊँचे चिंतकों, सबसे तेज़ विचारकों में से चुना है...”

“अच्छा,” वाल्टर ने कहा, “मुझे उम्मीद थी कि कोई अन्य मेरे लिए यह फैसला कर सकेगा. क्योंकि यह एक मुश्किल समस्या है.”

“तुम अब उसके बारे में और मत सोचो,” शेर ने कहा.

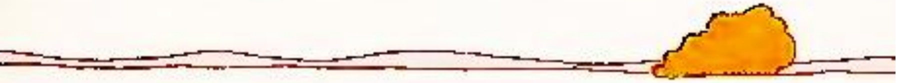

उसने अपना सिर पीछे किया और फिर उसकी तेज़ दहाड़ जंगल में गूँज उठी.

“यहाँ एक अजीब सा बच्चा यह पूछ रहा है कि वह बड़ा होकर क्या बने. वो विकल्पों में से चुन सकता है! लेकिन वह अपना मन नहीं बना पा रहा है!”

लगभग तुरंत ही दूर से धूल का एक छोटा सा बादल उठा.

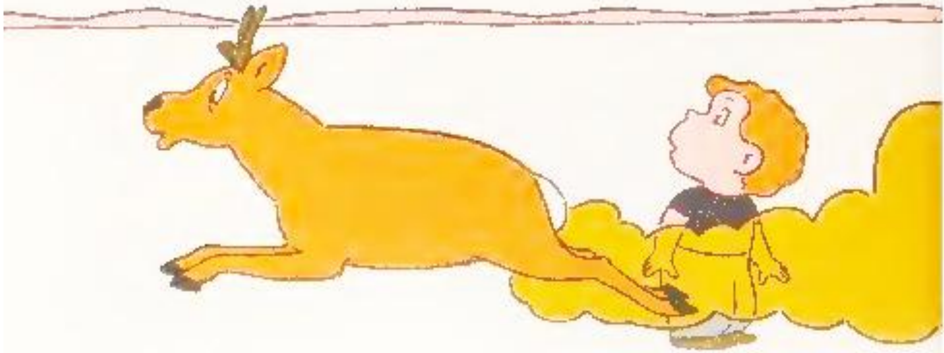

धूल का बादल तेज़ी से बढ़ता हुआ वाल्टर और शेर के पास आया.

एक जानवर उनकी ओर दौड़ा, लंबी छलांगें और कुत्तों की आवाज़ के साथ ज़मीन पर तेज़ी से दौड़ता हुआ.

वह खुरों की खड़खड़ाहट के साथ गुज़रा.

और फिर वो आगे दौड़ता रहा.

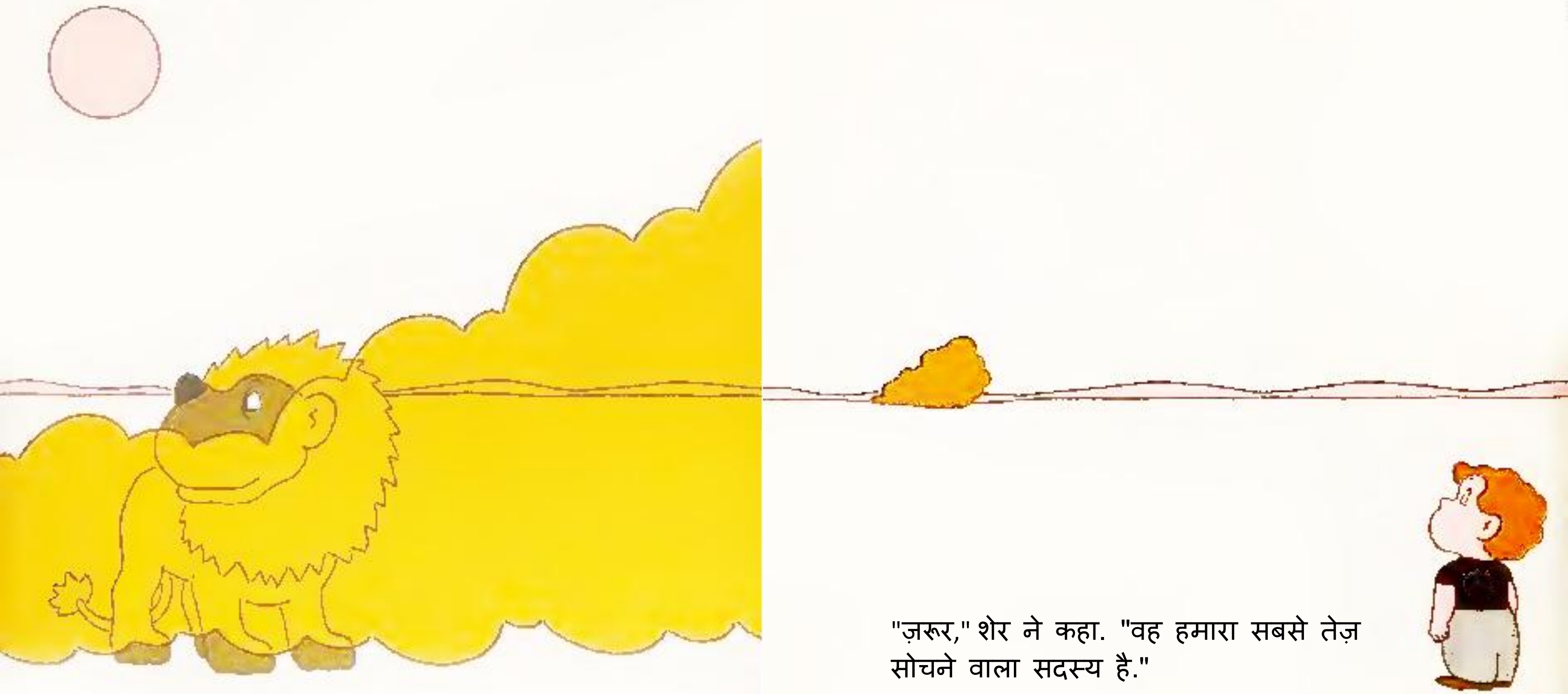

"वह एक मृग है," शेर ने कहा.

"वह निश्चित रूप से तेज़ दौड़ सकता है," वाल्टर ने कहा.

शेर ने अपना सिर हिलाया. "वो मेरी परिषद का सबसे तेज़ सदस्य है," शेर ने कहा.

"क्या वह इस बारे में सोचेगा कि जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मुझे क्या बनना चाहिए?" वाल्टर ने पूछा.

"ज़रूर," शेर ने कहा. "वह हमारा सबसे तेज़ सोचने वाला सदस्य है."

"वह ऐसा लगता है?" वाल्टर ने कहा.

"हमने यह साबित करने के लिए एक पैदल दौड़ आयोजित की थी," शेर ने कहा.

वाल्टर ने मृग को धूल के बादल में उछलते हुए देखा. उसने धूल के बादल को छोटा होते और पहाड़ियों के ऊपर गायब होते देखा.

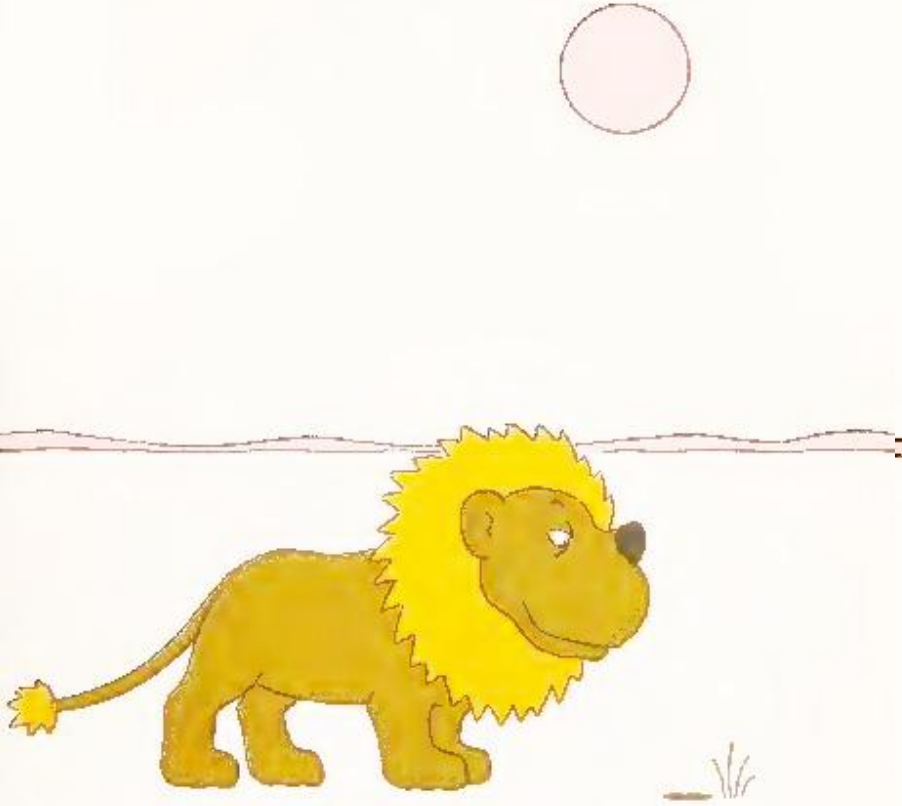

"मुझे लगता है कि वह इतनी तेज़ दौड़ रहा था कि रुकने के बारे में सोच भी नहीं सकता था," वाल्टर ने कहा. "वह कब रुकेगा और सोचेगा?"

शेर ने अपना ध्यान कहीं और, घास के एक झुरमुटे के पास ज़मीन में बने एक छोटे से गड्ढे की ओर केंद्रित किया.

"मृग की चिंता मत करो," उसने कहा. "वह हमेशा सबसे पहले समस्या के उत्तर तक पहुँचता है. तुम जल्दी देखोगे."

मृग को देखने के लिए कुछ भी नहीं था. वह पूरी तरह नज़रों से ओझल हो गया था. वाल्टर फिर शेर के पास गया जो बिल में झाँक रहा था.

बिल से दो छोटे पंजे और नुकीली थूथन वाला एक छोटा सिर बाहर निकला.

"वो रहा एक और परिषद सदस्य," शेर ने कहा. "छछूंदर."

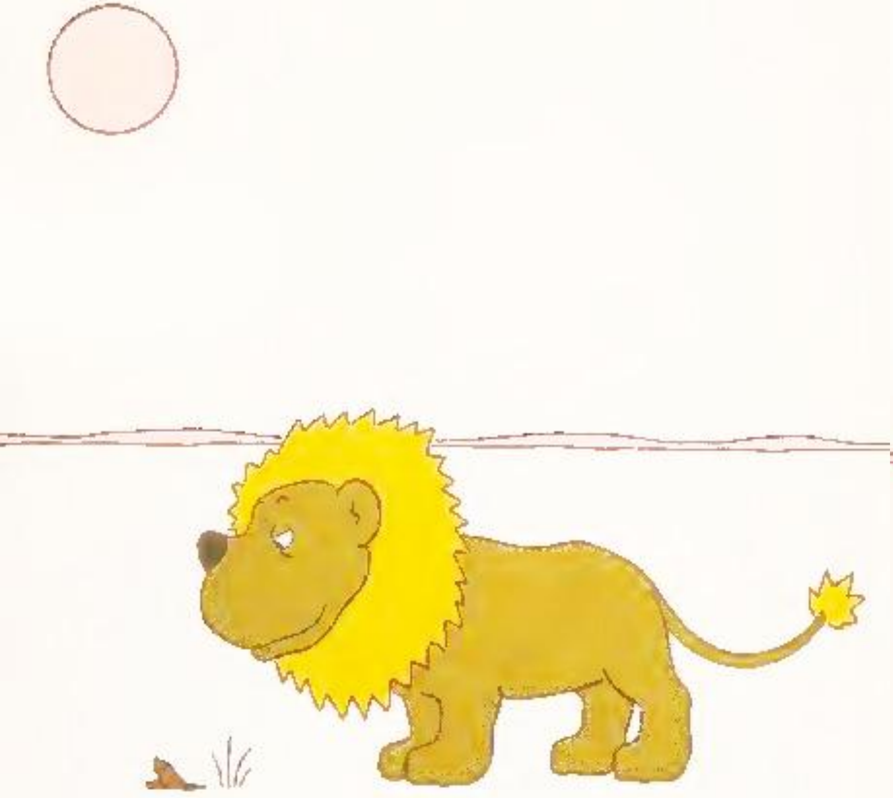

छछूंदर ने अपना सिर इधर-उधर घुमाया और फिर उसे एक अंधेरे घेरे में इधर-उधर घुमाया.

"वह अपनी सुरंग की तलहटी में वापस जाकर तुम्हारी समस्या के बारे में सोचेगा," शेर ने कहा.

"सच में?" वाल्टर ने कहा.

"क्यों नहीं?" शेर ने कहा.

वाल्टर ने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि छछूंदर, अपना सिर कुछ और बार घुमाने के बाद, धरती के अंधेरे में वापस रेंगकर नीचे नहीं चला गया. फिर उसने शेर को जवाब दिया.

"अच्छा," वाल्टर ने कहा, "वह बहुत तेज़ नहीं दिखता, है ना?"

"नहीं." शेर ने कहा, "वो तेज़ नहीं है."

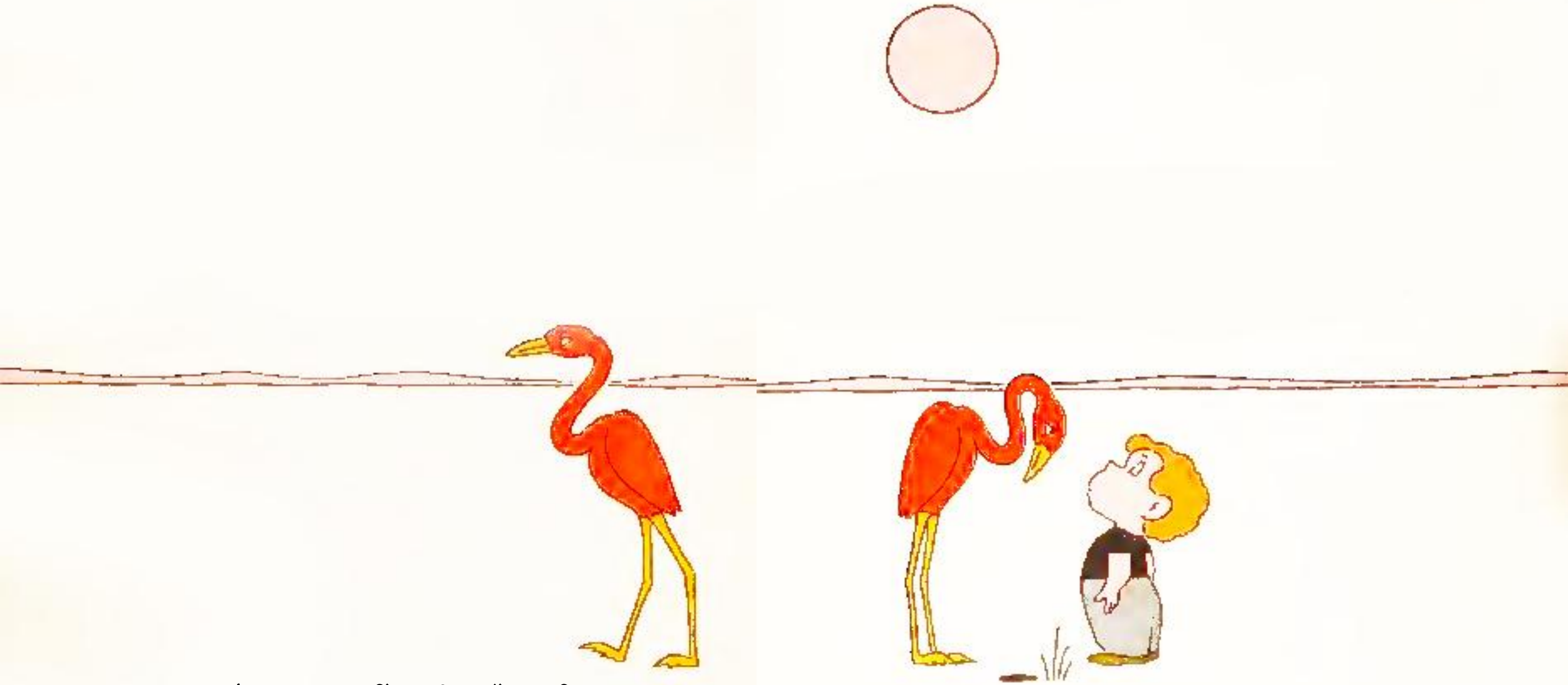

वह मुड़ गया और वाल्टर वहीं ज़मीन में खाली जगह को घूरता रहा.

"दिखावा धोखा दे सकता है, है ना?" शेर ने कहा. "मुझे यह समझने में कुछ समय लगा कि छछूंदर हमारा सबसे गहरा विचारक है. लेकिन अब कोई ऐसा जीव आ रहा है जिसके बारे में तुम कहोगे कि वह काफ़ी तेज़ दिखता है—फ़्लेमिंगो."

लाठी जैसे पैरों और लंबी रबर जैसी गर्दन वाला एक ज्वलंत लाल पक्षी ऊपर आया और उसने वाल्टर की तरफ मूर्खतापूर्ण ढंग से आँख मारी.

वाल्टर ने भी फ्लेमिंगो की तरफ आँख मारी.

"एक और प्रतिभाशाली परिषद सदस्य," शेर ने कहा.

फिर वह पक्षी वाल्टर को अपने चमकदार पंखों को घूरते हुए छोड़कर चला गया.

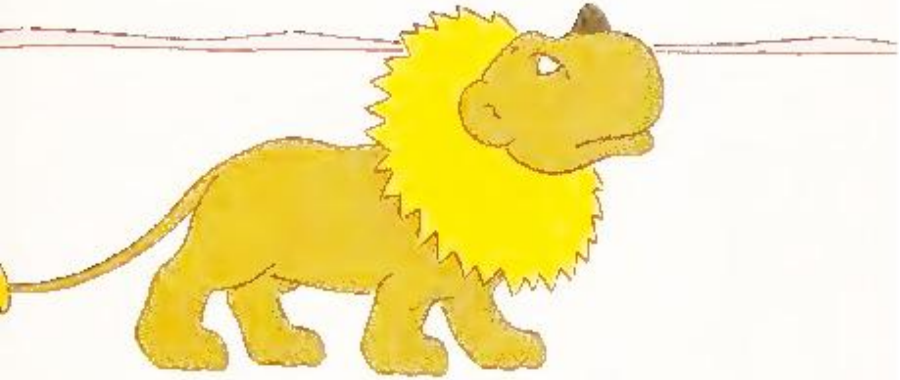

"मेरा मतलब उसके चमकीले पंखों से नहीं था," वाल्टर ने कहा. "मेरा मतलब उसके सोच से था."

"सोचने के कई तरीके होते हैं," शेर ने कहा, "और हम तुम्हारी इस समस्या पर हर पहलू से विचार करना चाहते हैं, है ना?"

"वो मुझे ठीक लगता है," वाल्टर ने कहा.

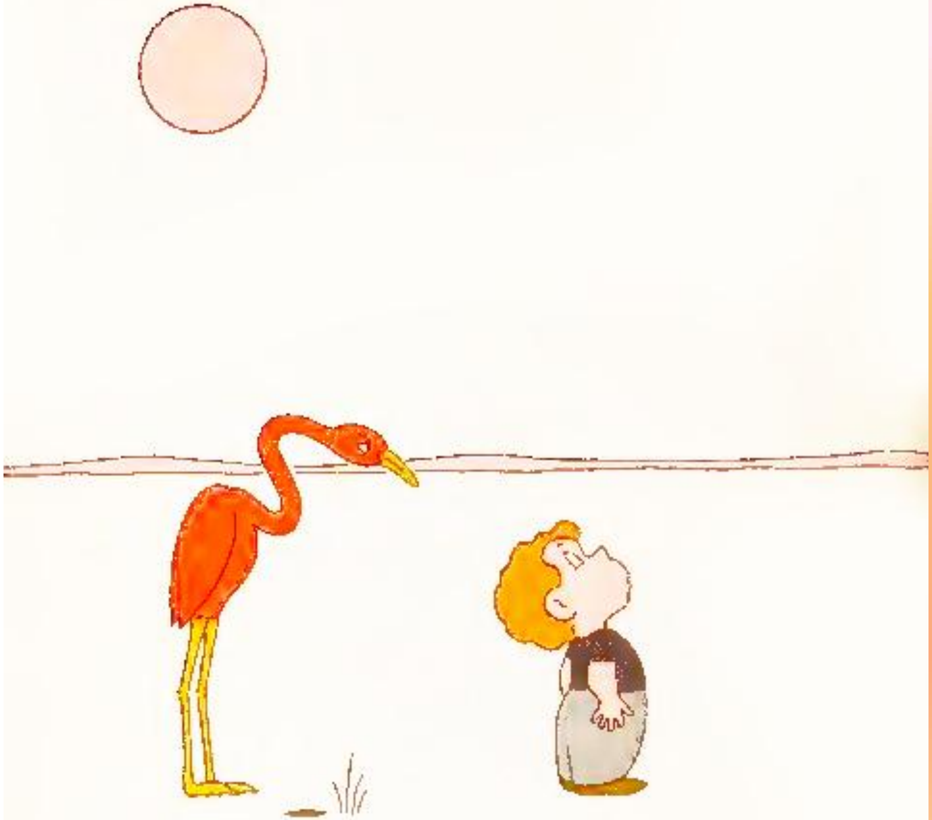

"उदाहरण के लिए, उच्च सोच," शेर ने कहा. "मैं इतने गंभीर प्रश्न का निर्णय बिना उच्च विचार के करने की कल्पना भी नहीं कर सकता, है ना?"

"क्या?" वाल्टर ने कहा.

अब उसने फ्लेमिंगो से अपना मुंह मोड़ लिया.

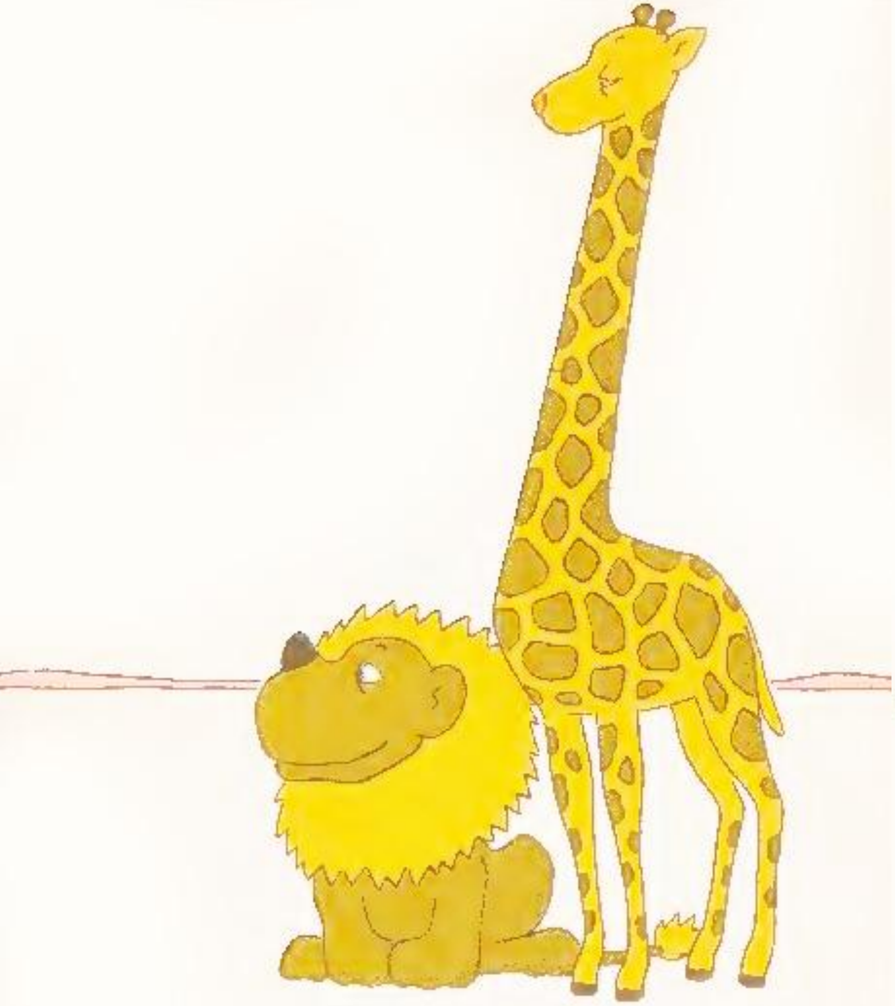

और शेर के बगल में उसने एक धब्बेदार शरीर के नीचे चार ऊँची टाँगें देखीं. उसकी नज़रें एक बहुत लंबी, खड़ी गर्दन पर टिकी थीं, जिस पर छोटे सींग थे और एक चेहरा जो दूर से हर चीज़ को देख रहा था.

"ओह," वाल्टर ने कहा.

शेर ने कहा. "देखो मैं जिराफ़ की ही बात कर रहा था."

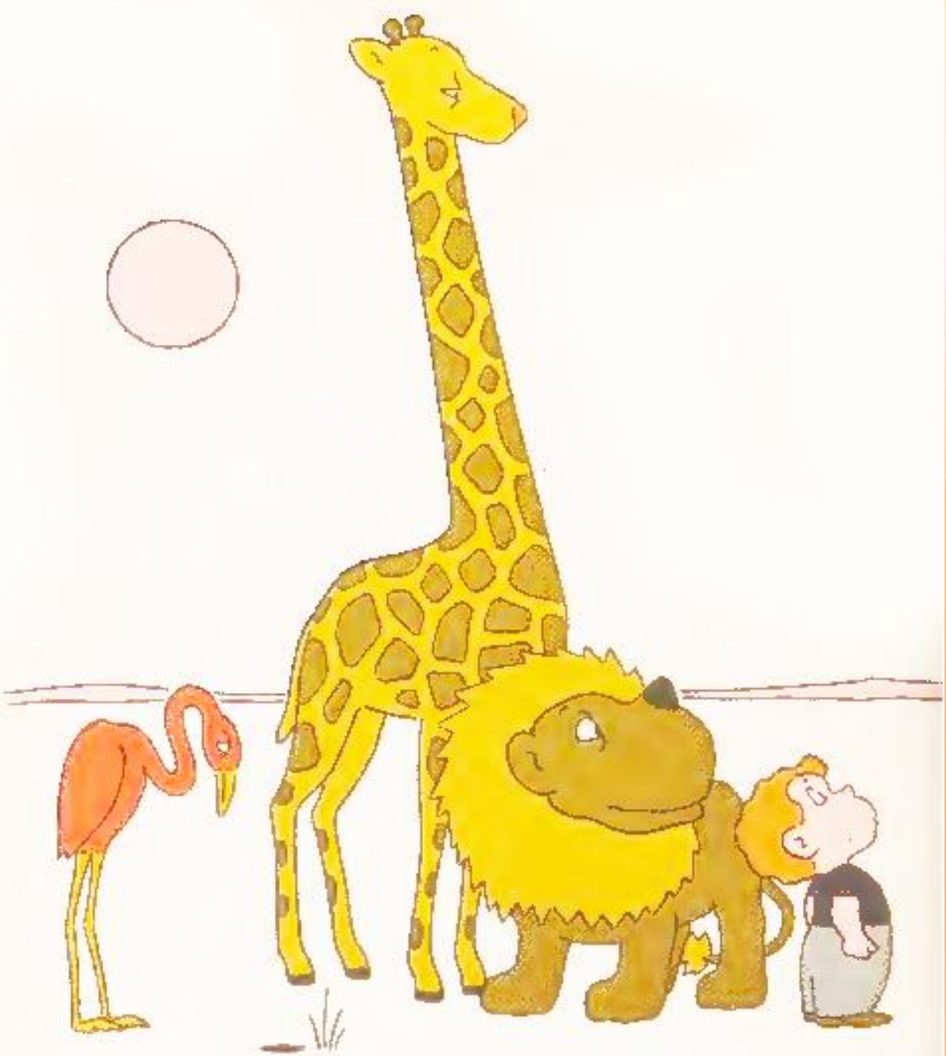

जिराफ़ ने परिषद में अपनी जगह ली और वाल्टर की तरफ़ देखते हुए अपनी नाक नीची कर ली.

शेर बोलता रहा.

"हाँ," उसने कहा, "हमें हर तरह की सोच की ज़रूरत है. हमें उच्च विचारों की ज़रूरत है, और हमें..."

वह रुका.

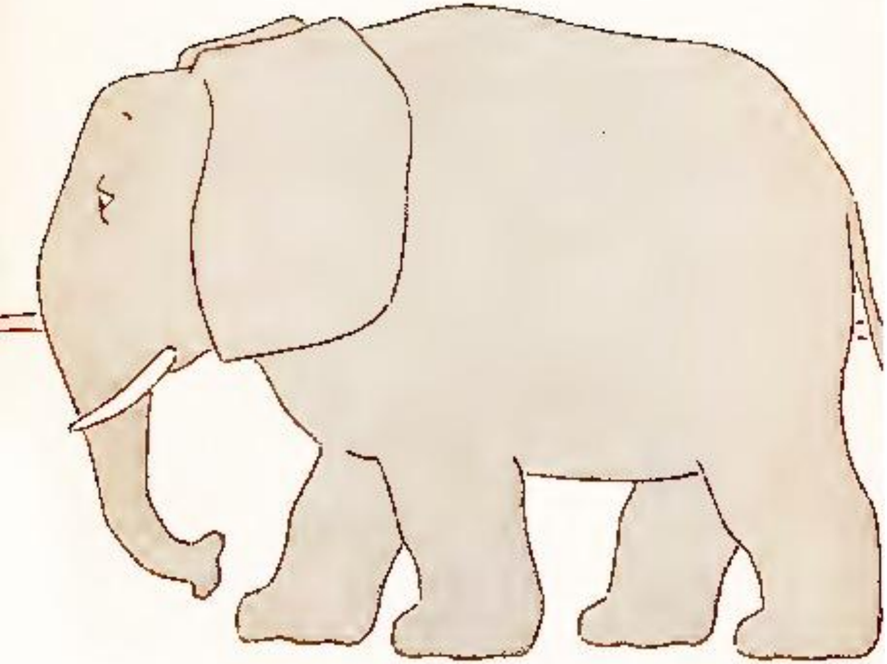

ज़बरदस्त धमाकों से धरती हिलने लगी थी. जैसे-जैसे धमाके नज़दीक आते गए, शेर को अपनी आवाज़ ऊँची करनी पड़ी ताकि उसकी आवाज़ सुनाई दे.

"और हमें बड़े विचारों की ज़रूरत है!"

वाल्टर ने हाथी को आते देखा.

"ओह," उसने कहा.

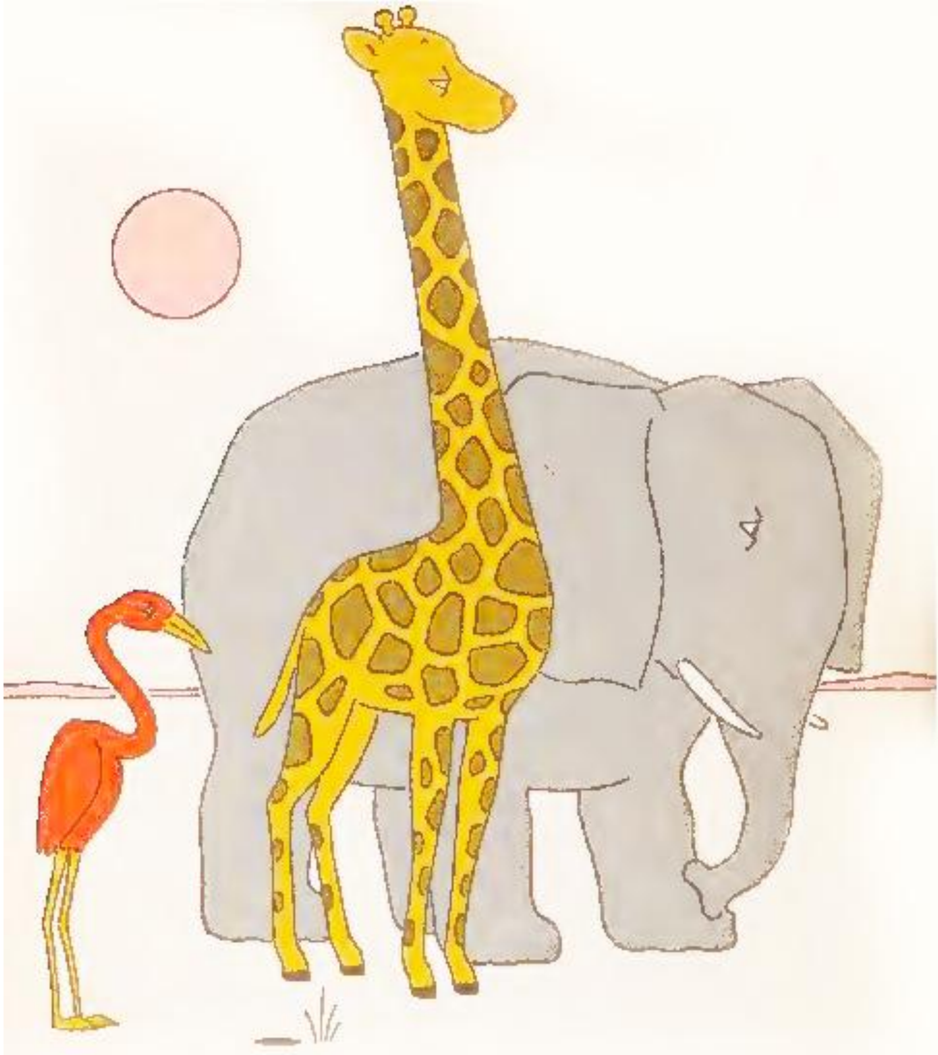

हाथी ने वाल्टर की ओर देखा और वो छछूंदर के बिल के पास जिराफ़ और फ्लेमिंगो के पास चला गया, और शेर ने अपनी बात फिर शुरू की.

"क्या तुम जानते हो कि इस समस्या के लिए सबसे ज़रूरी क्या है?"

इससे पहले कि कोई और जवाब दे पाता, उसने जवाब दिया.

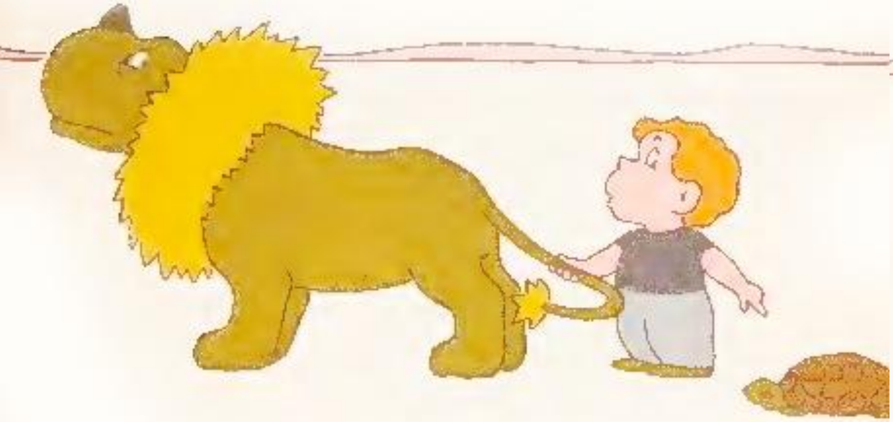

"इसके लिए बहुत सारी सीधे-सादे और गहरे सोच-विचार की ज़रूरत है," उसने कहा. “बात यही है."

उसी क्षण वाल्टर ने देखा कि एक सपाट चट्टान उनके पास आने के लिए आगे बढ़ रही है. उसने शेर की पूँछ खींची.

"देखो," उसने कहा.

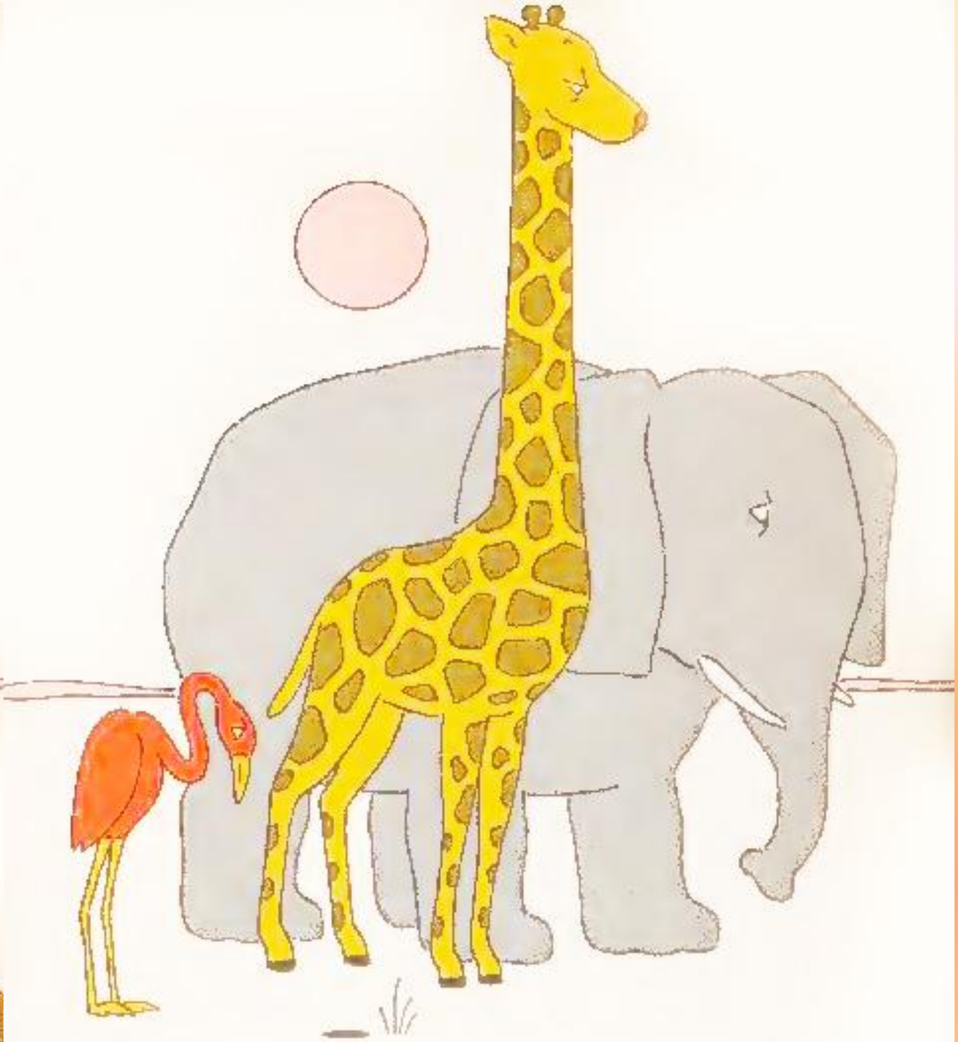

"आह! हाँ!" शेर ने कहा. "कछुआ. अब मेरी परिषद पूरी हो गई है."

वह हिलती हुई चट्टान के पास बैठ गया जिसके अब साफ़ तौर पर चार पैर, एक गर्दन और एक सिर था.

वाल्टर उसे घूरता रहा और कछुए ने नींद भरी आँखों से उसकी ओर देखा. वाल्टर ने अपना सिर हिलाया.

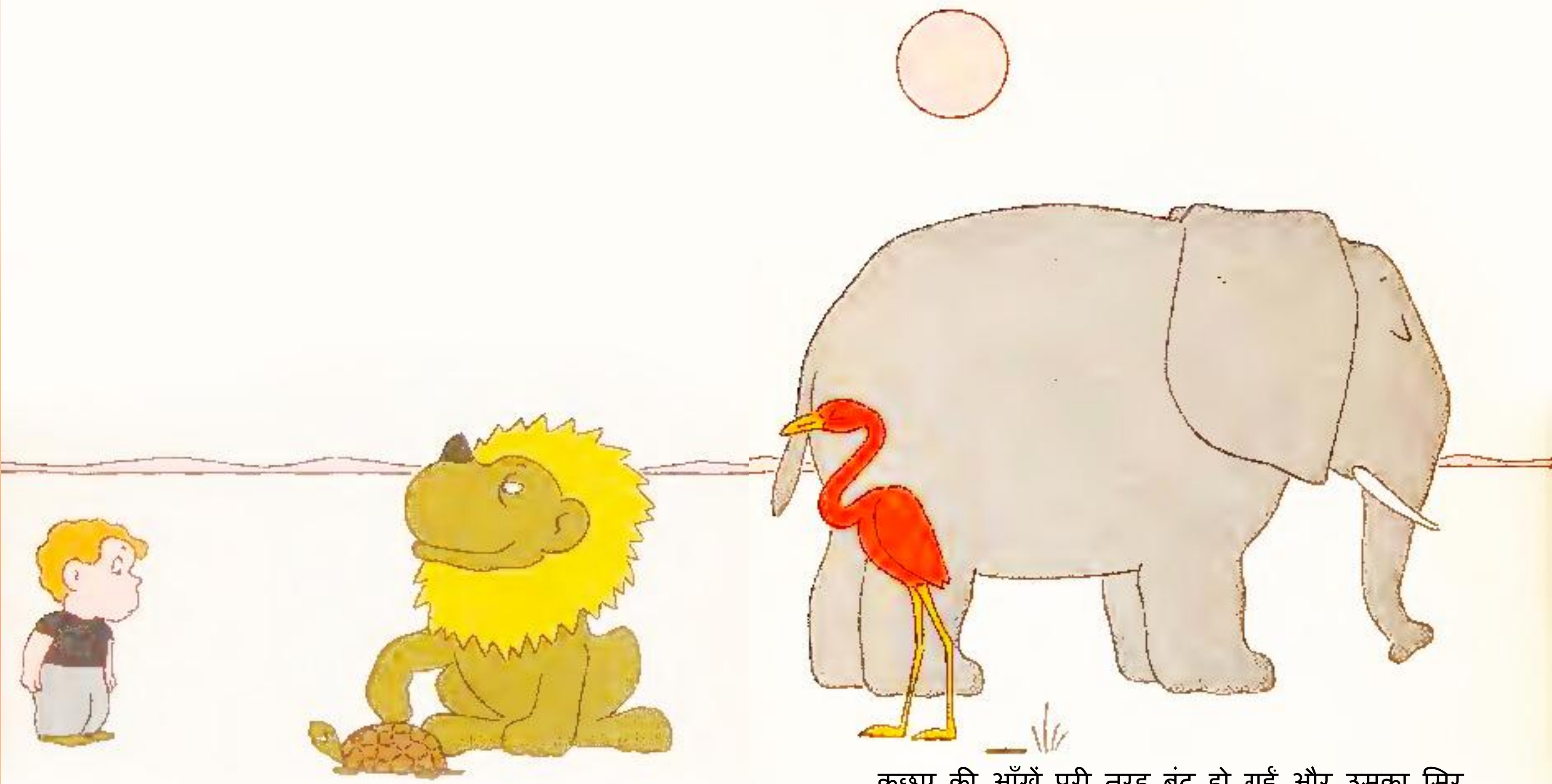

"वह तो छछूंदर जितना भी होशियार नहीं लगता है," उसने कहा. "ऐसा लग रहा है जैसे वह मुश्किल से ही सोच पाता होगा."

शेर ने कछुए के चट्टान जैसे खोल पर अपने पंजे का पिछला हिस्सा थपथपाया.

"मुश्किल से सोचता है?" उसने कहा. "हाँ, इसमें कोई शक नहीं कि वह हमारा सबसे ज़्यादा सोचने वाला इंसान है."

कछुए की आँखें पूरी तरह बंद हो गईं और उसका सिर धीरे-धीरे खोल में धँस गया.

वाल्टर खोल को घूरता रहा.

अजीब बात है कि जैसे-जैसे समय बीतता गया, ऐसा लगने लगा कि अंदर बैठा कछुआ शायद बहुत सोच-विचार कर रहा है.

सभी जानवर खामोश विचारों में डूबे हुए लग रहे थे.

हाथी बीच-बीच में एक भारी आह भरकर अपना भारी वज़न इधर-उधर करता रहा, मानो वह एक के बाद एक गंभीर विचारों से जूझ रहा हो.

जिराफ़ अपनी लंबी गर्दन पर सिर अकड़ाए हुए, एक जगह से दूसरी जगह धीरे-धीरे टहल रहा था, जिससे ऐसा लग रहा था जैसे वह ऊँचे विचारों को ऊँचे मन से अपना रहा हो.

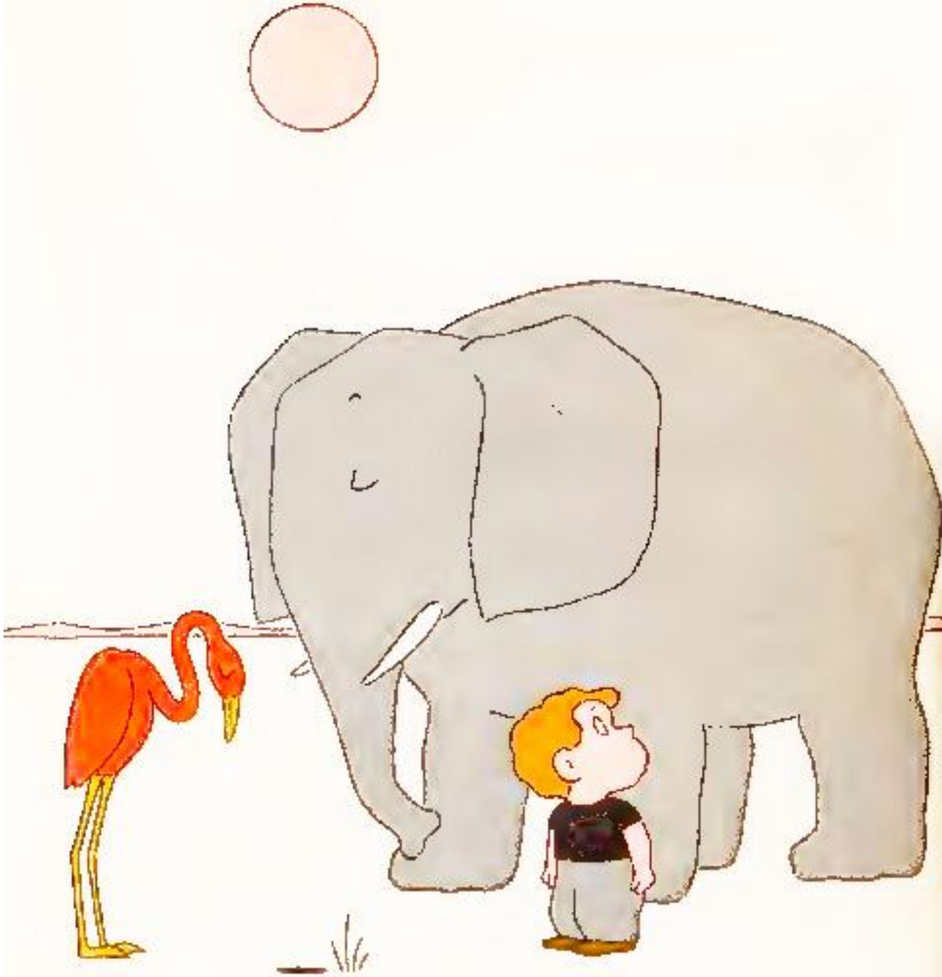

सूरज साफ़ आसमान में और ऊपर उठ गया. फ्लेमिंगो, अब बेवकूफी से पलकें नहीं झपका रहा था, बल्कि अपनी आँखें कसकर बंद किए हुए था, उस चकाचौंध में वाकई बहुत चमकीला लग रहा था.

घास का छेद उसे छछूंदर की याद दिला रहा था. उस छोटे से जीव को अपने बिल में, ज़मीन के नीचे गहराई से सोचते हुए कल्पना करना आसान था.

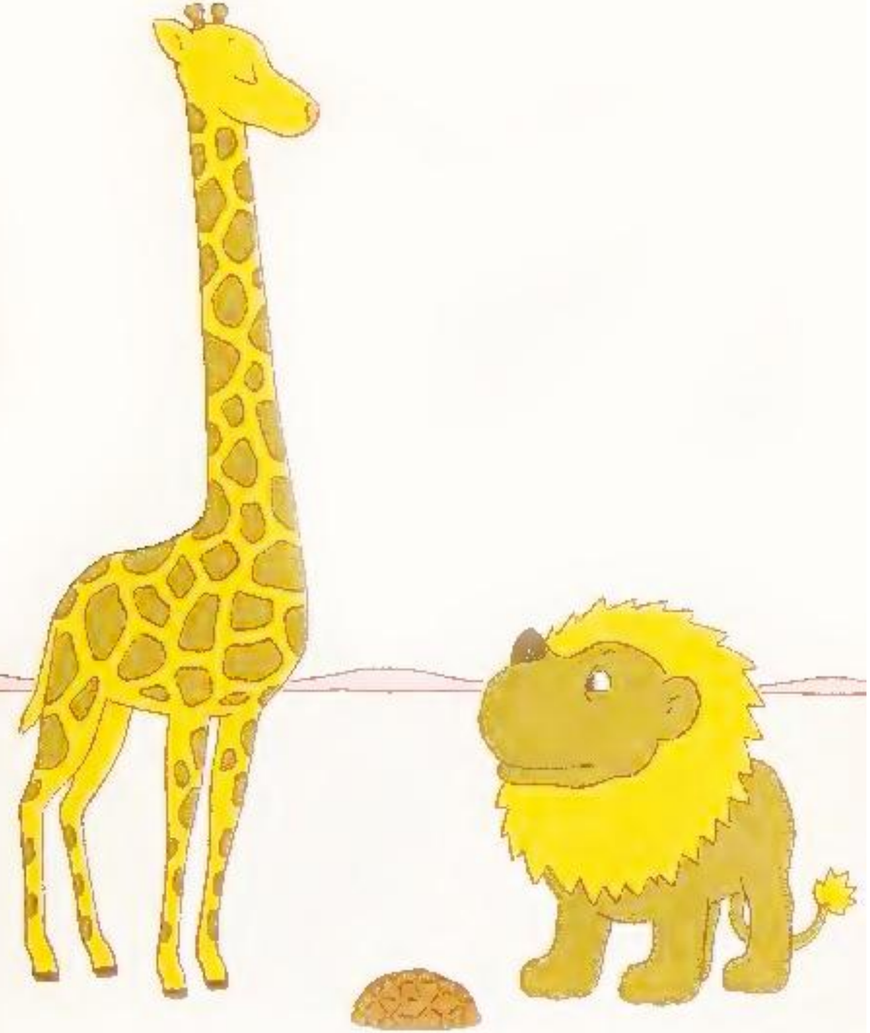

"क्या अब तक काफ़ी सोच-विचार नहीं हुआ?" वाल्टर ने कहा

"हाँ," शेर ने कहा. "कहाँ है वह मृग?"

"क्या हमें उसका इंतज़ार करना होगा?" वाल्टर ने कहा.

"हम हमेशा मृग का इंतज़ार करते हैं," शेर ने कहा. "वैसे वह हमेशा जवाब देने में सबसे आगे होता है, है ना?"

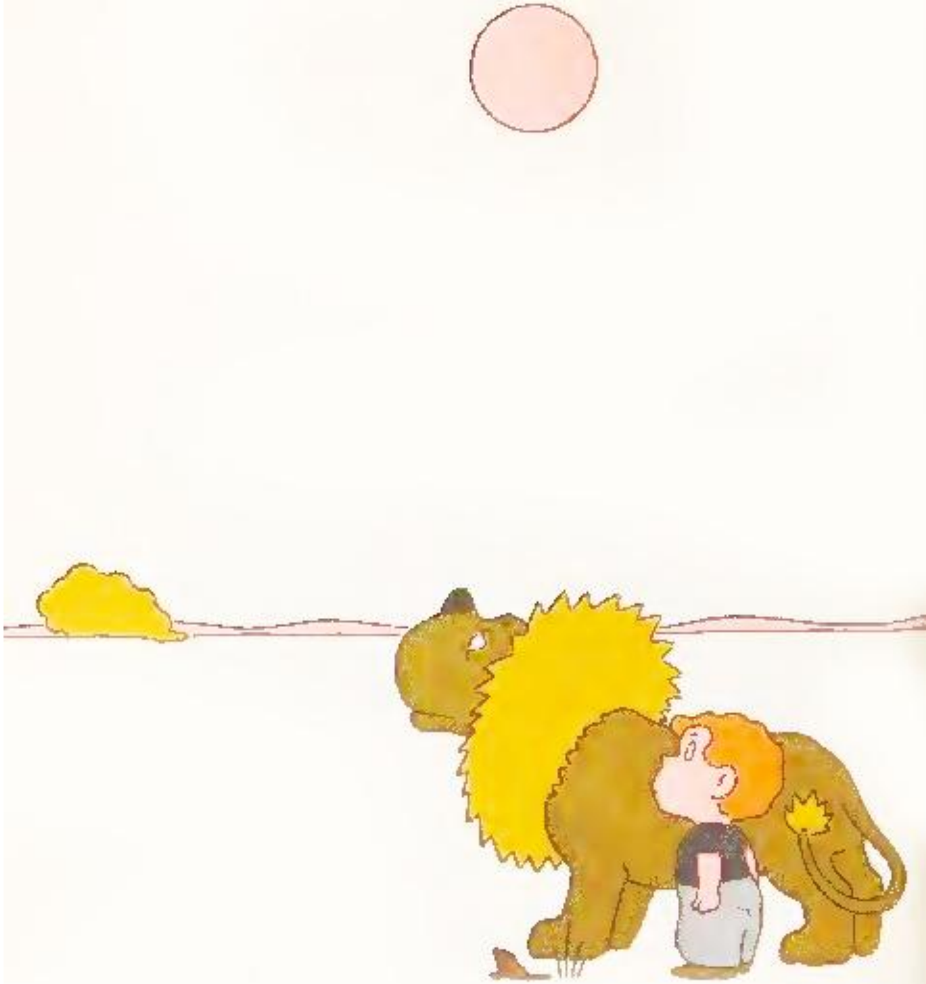

सूरज ज़्यादा ऊपर नहीं गया था कि दूर पहाड़ियों के ऊपर से खुरों की आवाज़ आई.

वाल्टर ने धूल का एक बादल आते देखा.

जानवर उम्मीद से हिले.

हाथी ने अपने पैर हिलाए और अपनी सूंड हिलाई.

जिराफ़ ने अपनी नाक से धूल को देखा. बादल.

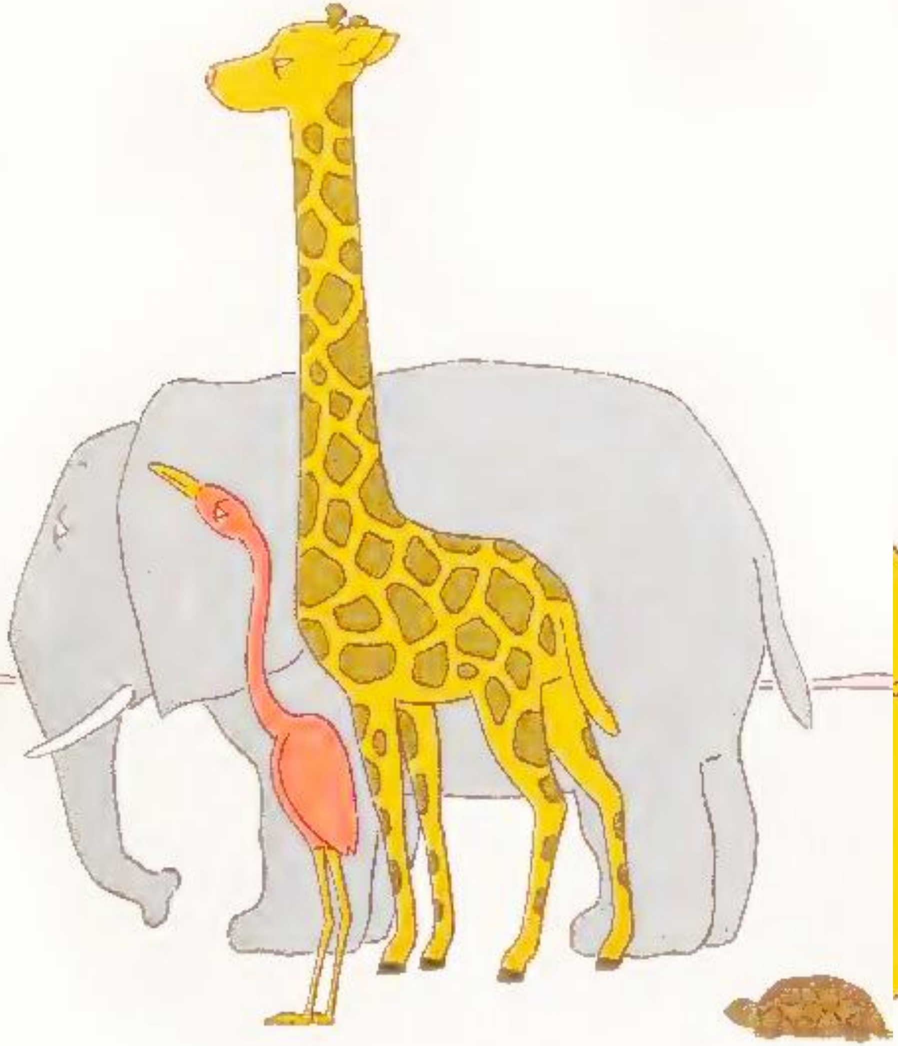

फ्लेमिंगो ने अपनी रबर जैसी गर्दन सीधी की.
छछूंदर अपने बिल में उछल पड़ा.
कछुए का सिर उसके खोल से आधा बाहर निकल आया.
शेर अधीरता से आगे बढ़ा.
वाल्टर भी आगे बढ़ा. मृग उनकी ओर दौड़ा.

वह एक छलांग लगाकर वहां पहुँचा
और फिर फिसलकर वहां रुक गया.
हाँफते हुए, उसने वाल्टर का सामना किया.
"मैंने पूरी तेज़ी से सब कुछ सोच लिया है!" उसने कहा.
"अच्छा," वाल्टर ने कहा.
मृग की साँस लगभग फूल गई थी.
"मेरे पास जवाब है!" उसने कहा.

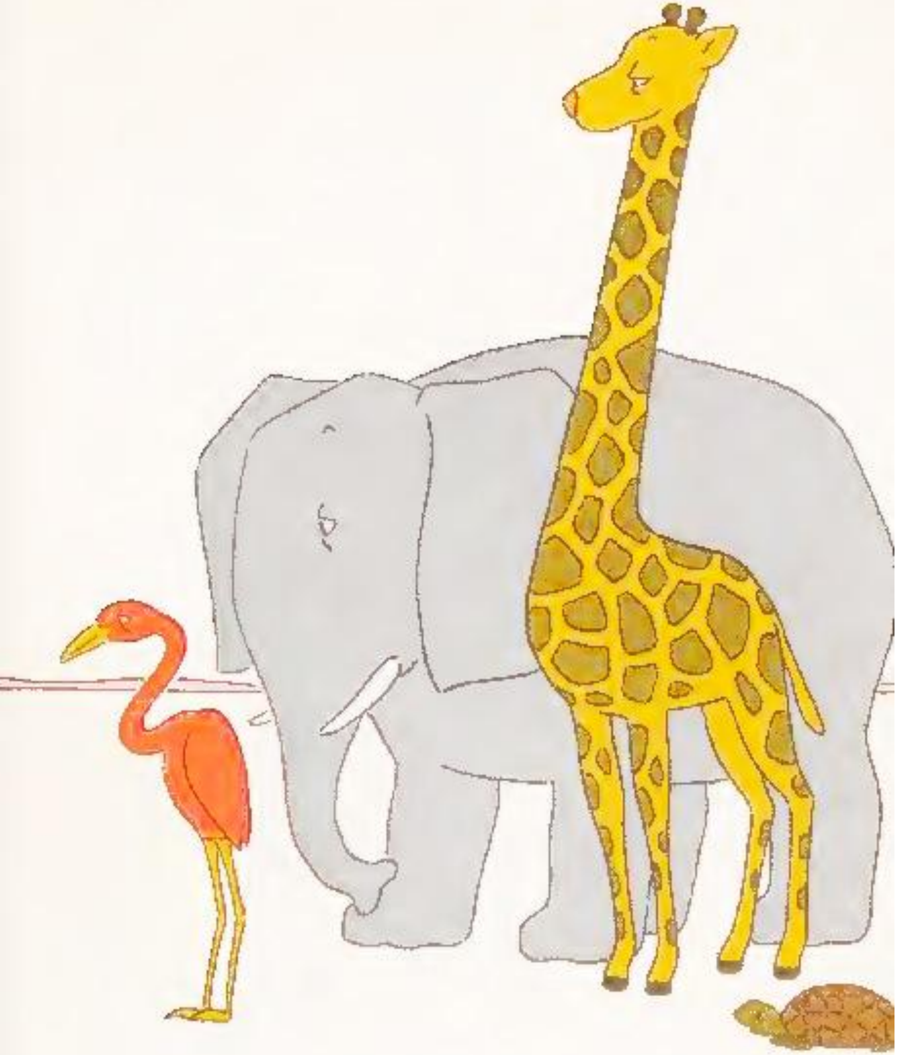

"बाहर निकलो," शेर ने कहा.

मृग ने उत्साह से वाल्टर पर अपनी नज़रें गड़ा दीं.

"तुम्हें पता है बड़े होकर तुम्हें क्या बनना चाहिए?" उसने कहा. "क्या तुम्हें पता है?"

"क्या?" वाल्टर ने कहा.

"तुम बड़े होकर एक मृग बनो!" मृग ने कहा.

वाल्टर को कोई उपयुक्त उत्तर सूझता, उससे पहले ही उसके पैरों के पास ज़मीन से एक धीमी आवाज़ आई.

"मैंने इस बारे में गहराई से सोचा है."

"हाँ?" वाल्टर ने कहा.

"तुम एक छछूँदर बनो!" छछूँदर ने कहा.

"तुम एक फ्लेमिंगो बनो!" फ्लेमिंगो ने कहा.

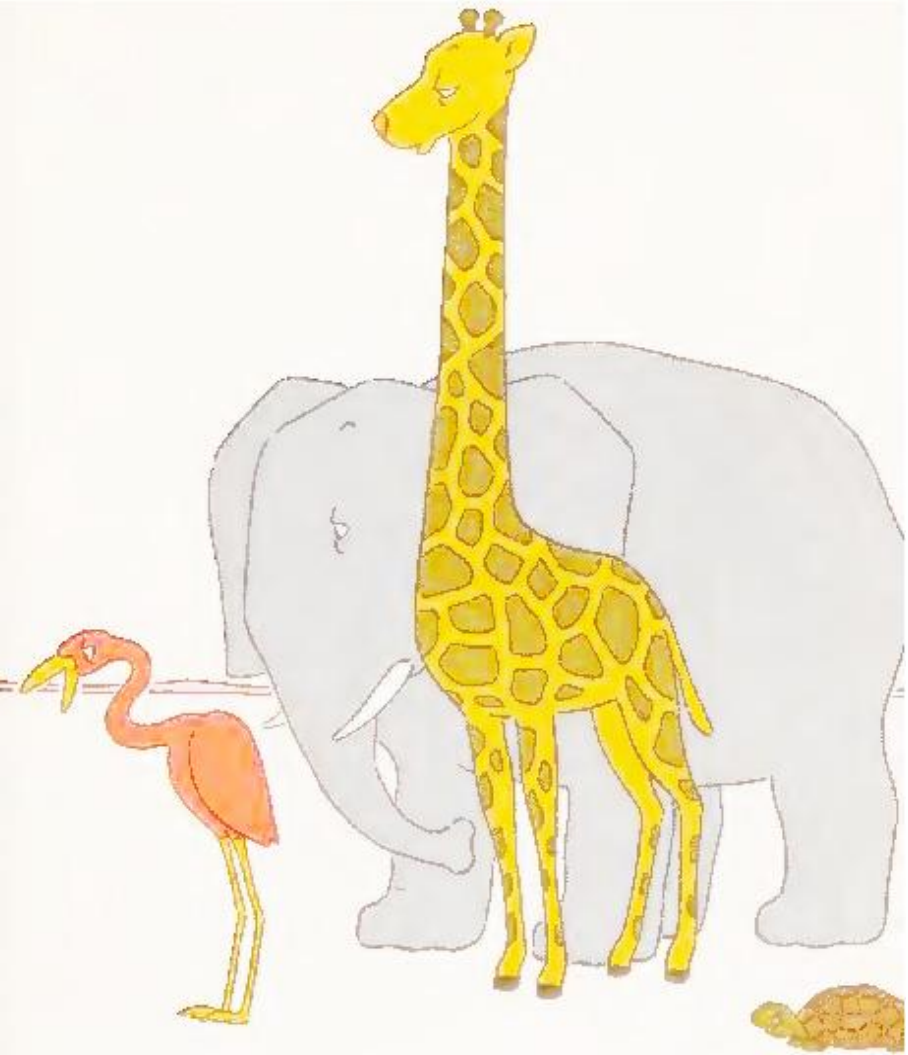

हवा में ऊपर से एक और आवाज़ आई, इतनी धीमी और इतनी अलग कि मुश्किल से सुनाई दे रही थी. वाल्टर ने जिराफ़ की ओर देखा.

"तुम एक जिराफ़ बनो!" जिराफ़ ने कहा.

उस समय ऐसा लग रहा था कि सभी जानवरों में से, केवल शेर के पास कहने के लिए कुछ नहीं था.

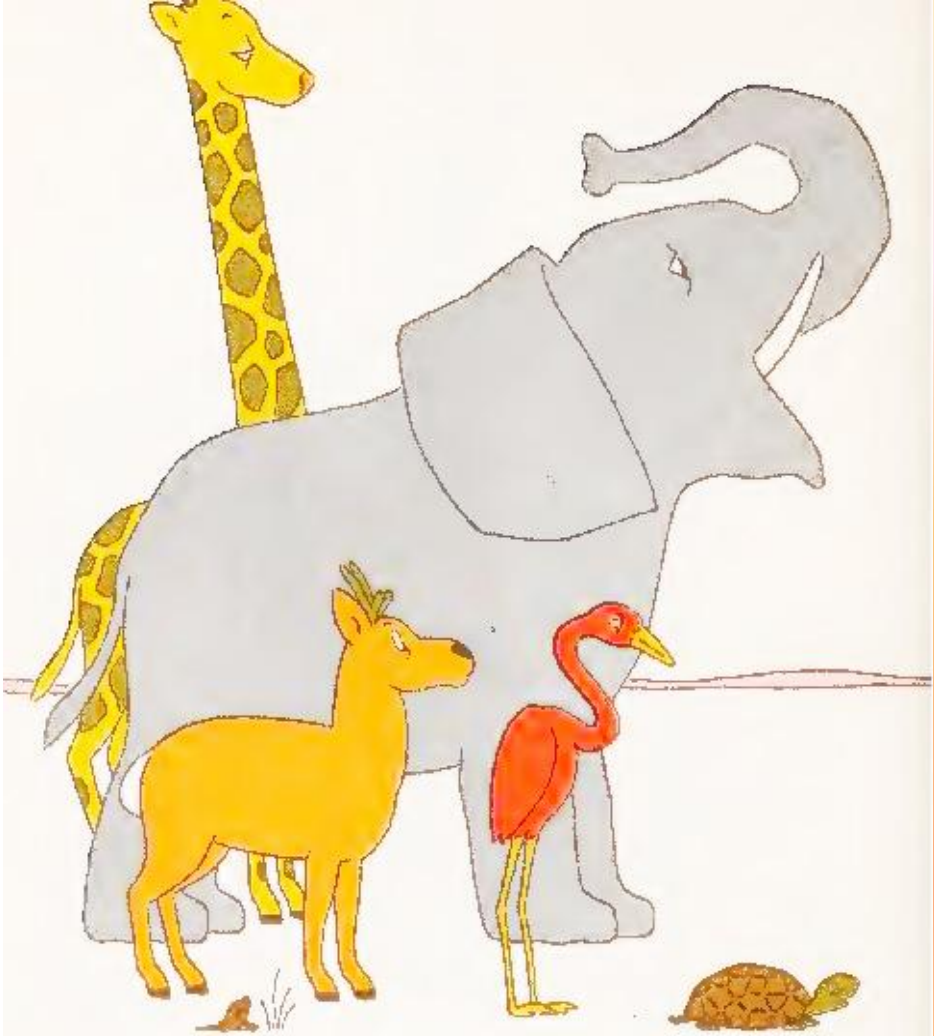

वाल्टर किनारे हट गया और शेर उसके साथ चला गया, क्षमाप्रार्थी भाव से.

तुरही बजी. वाल्टर धमाके की दिशा में मुड़ा.

"तुम बड़े होकर हाथी बनो!" हाथी ने कहा.

कछुए ने अपनी गर्दन खोल से बाहर निकाली.

उसका सिर इधर-उधर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह वाल्टर पर अपनी नज़रें केंद्रित नहीं कर पाया.

"तुम कछुआ बनो!" कछुए ने कहा.

वाल्टर पीछे हट गया. सभी जानवरों को विनम्रता से सिर हिलाया. वह जाने के लिए तैयार हो गया.

"धन्यवाद," उसने कहा.

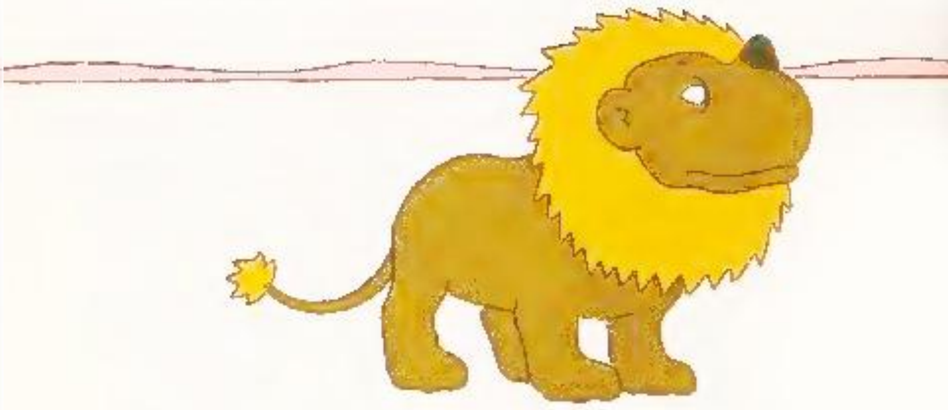

शेर वाल्टर के साथ थोड़ी दूर तक चला.

"कितने सारे अलग-अलग जवाब!" उसने कहा. "लेकिन उन सभी का जवाब एक ही था, सच में," वाल्टर ने कहा. "हर एक ने सोचा कि मुझे उसके जैसा ही बनना चाहिए."

"मुझे समझ नहीं आ रहा," शेर ने कहा. "नहीं, इस सवाल में ज़रूर कुछ गड़बड़ है."

"मुझे अब जाना होगा," वाल्टर ने कहा.

"एक आखिरी विचार," शेर ने कहा. "तुम जो भी फैसला लो, बिना किसी डर के, हिम्मत से फैसला लेना. जाओ हिम्मत से सोचो!"

"मैं वही करूँगा," वाल्टर ने कहा.

"हाँ!" शेर ने कहा. "और तुम बड़े होकर शेर बनो!"

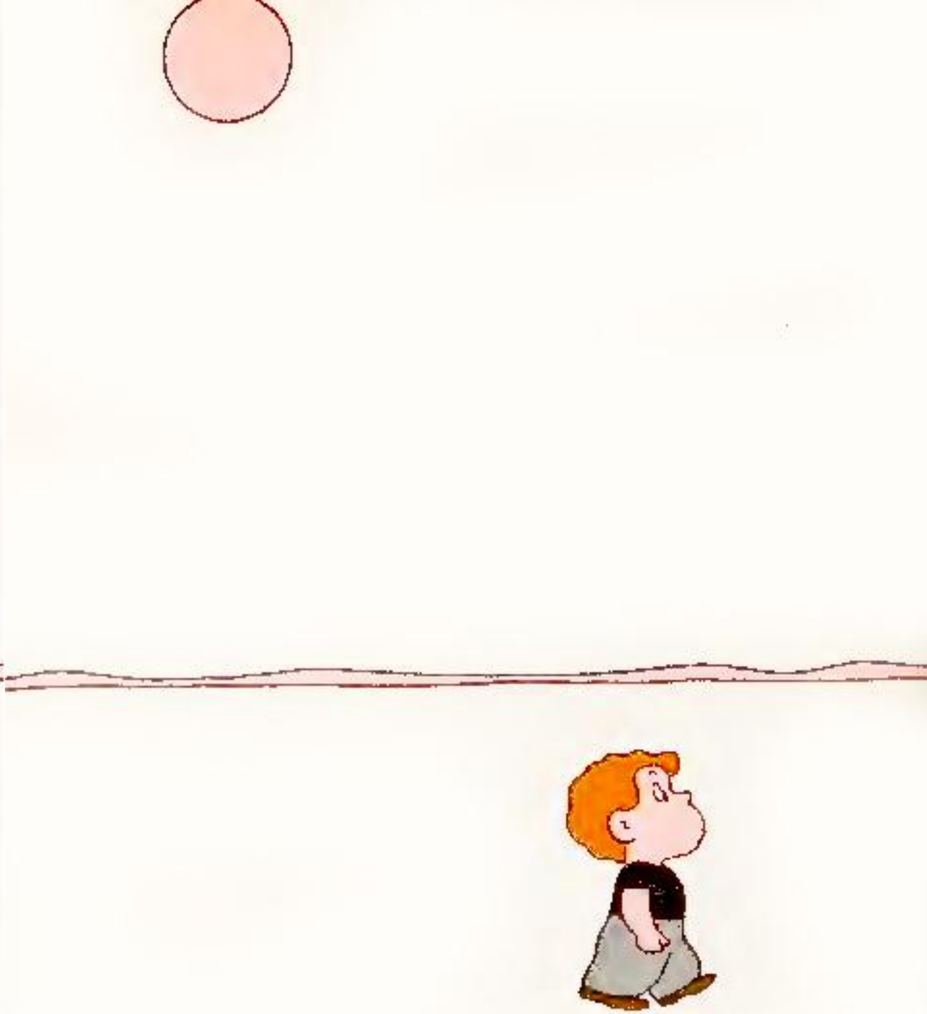

वाल्टर अकेला चल पड़ा, सूरज आसमान में ऊँचा था, एक ऐसे रास्ते पर जो सीधे जंगल से निकलता हुआ जा रहा था. चलते-चलते वह सोचता रहा.

उसे अभी भी नहीं पता था कि बड़ा होकर क्या बनना है. लेकिन अब उसे यकीन था कि वह इसके बारे में सोच पाएगा और कोई बेहतर फैसला ले पाएगा.